चौपाल

जनवरी - जून 2020

सृष्टि में केदारनाथ सिंह

केदारनाथ सिंह

चौपाल

साहित्य की अर्द्धवार्षिकी

संपादक : कामेश्वर प्रसाद सिंह

अंक : 12, वर्ष : 7

ISSN : 2348-3466

ककक

चौपाल : अर्द्धवार्षिकी
जनवरी-जून, 2020

अव्यावसायिक
अंक 12, वर्ष 7

संपादक : कामेश्वर प्रसाद सिंह

सहयोग : असीम अग्रवाल, सपना तिवारी, साहिल कैरो, आदर्श कुमार मिश्र
अतुल कुमार शुक्ला

लेजरटाइप सेटिंग : सुभाष कश्यप, दिल्ली मो. : +91–9911163286

सहयोग राशि : 300 रुपए (यह अंक)-डाक द्वारा मंगवाने पर-350 रुपए
600 रुपए (संस्थागत)-डाक द्वारा मंगवाने पर-650 रुपए
200 रुपए-वार्षिक सहयोग (व्यक्तिगत)
300 रुपए-वार्षिक सहयोग (संस्थागत)
5000 रुपए-आजीवन (व्यक्तिगत)

संपर्क : कामेश्वर प्रसाद सिंह
कोठी नं. 3, अरुणा नगर, जिला एटा-207001 (उ.प्र.)
मो. : +91–9410068984, 9719831031
ई-मेल : kameshwarprasadsingh60@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र एटा न्यायालय होगा।

मुद्रक : प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली

CHAUPAL
Half Yearly Magazine of Literature
Language : Hindi
ISSN : 2348-3466

अनुक्रम

सम्पादक की ओर से

माझी के पुल में माझी की तरह	कामेश्वर प्रसाद सिंह	7

कवि गुरु केदार की स्मृतियाँ

एक बेहतर दुनिया में हम अपने दिल और कंधों के...	गौरव सोलंकी	9
शब्दों का यह कैसा उत्सव	पंकज चतुर्वेदी	10
महान गुरु और महत्तर कार्य : केदारनाथ सिंह	देवशंकर नवीन	26
एक छतनार वृक्ष की छाया में	सियाराम शर्मा	37
जे.एन.यू. और हिंदी का एक बड़ा कवि	संजय कुमार	45
मेरे सपनों का विश्वकवि	विमलेश त्रिपाठी	51
बेहतरीन शिक्षक और इंसान : कवि केदारनाथ सिंह	वीरेश कुमार	56
गुरु-अभिभावक-दोस्त केदारनाथ सिंह...	प्रमोद कुमार तिवारी	61
बची रहे धूप और बचा रहे दोना भी	आनंद शुक्ल	72
जे.एन.यू. से लेकर कोलकाता तक	निशांत	77
दिल्ली से कटक : वाया कोलकाता	अंजुमन आरा	84
जाऊँगा कहाँ, रहूँगा यहीं	करुणा गुप्ता	92
क्या ले गुर संतोषिए, हौंस रही मन मांहि	प्रज्ञा पाठक	96
केदारनाथ सिंह : रहूँगा यहीं...	जैनेन्द्र पांडेय	100
केदारनाथ सिंह : जटिलताओं से मुक्ति	विजय कुमार भारती	106
भोजपुरी बोलेलू का...	आभा दुबे	108
केदार जी यही चाहते थे कि मैं संस्मरण ही लिखूँ	आभा मिश्रा	115
उनके घर का पता पूछते हुए	उमेश प्रसाद सिंह	119
बाघ से भेंट	मृत्युंजय पांडेय	126
केदार के बिना चकिया	राजेश मल्ल	131
केदार बिना चकिया	रामजी तिवारी	133
केदार जी मुझमें	शैलेन्द्र	139

मित्र मण्डली में कवि केदार

केदारनाथ सिंह : मेरे बड़े भाई	मैनेजर पांडेय	142
केदार जी के साथ यात्राएँ	गंगाप्रसाद विमल	144
केदार जी हिमाचल में	वरयाम सिंह	149

केदारनाथ सिंह के लोकोन्मुखी गीतों से एक मुलाकात — राधेश्याम बंधु — 152
अजातशत्रु की स्नेह-छाया में — रणजीत साहा — 158
कलकत्ता उन्हें बहुत पसंद था — निर्मला तोदी — 167
बहुत याद आते हैं केदार जी — शैलेन्द्र प्रताप सिंह — 170
क्या कहूँ आज जो नहीं कही — अनामिका — 176

घर परिवार में कवि केदार

अजातशत्रु केदार जी — ब्रह्मानंद सिंह — 178
यही हैं और यहीं रहेंगे — यशवंत कुमार सिंह — 181
हुसैन के साथ एक दिन — राजीव सिंह — 186
उठता हाहाकार जिधर है — सुबोध कुमार — 188
कहाँ मिलेंगे केदार नाना जी जैसे लोग? — आयुष सेंगर — 193

कृतियों में कवि केदार

कवि केदारनाथ सिंह की काव्य-शिल्प सजगता — दिविक रमेश — 194
केदारनाथ सिंह : समय और शब्द की पहचान — समीर कुमार पाठक — 202
कल्पना और छायावाद : एक जरूरी किताब — पुनीत कुमार राय — 208
गद्य की रंजकता और कवि केदार — पल्लव — 212
बातों में केदार — ललित श्रीमाली — 215
चिट्ठियों की पगडंडी — विनोद खेतान — 220

कवि का संसार

अभिनेता की जुबान और कविता की कहानी — जावेद अख्तर खान — 223
केदारनाथ सिंह की बात : होना रचना और रचनाकार के साथ! — पांडेय शशिभूषण शीतांशु — 233
प्रेम कविता लिखना मेरे लिए एक दुष्कर कार्य है : केदारनाथ सिंह — कमलानंद झा — 246
केदारनाथ सिंह उनकी कविता का जीवन-मूल्य — देवशंकर नवीन — 251
अपनी भाषा : अपने लोग — अनिल राय — 268

कसौटी पर कविता - एक कविता : एक आलोचक

माँझी के पुल में कहाँ है, माँझी! — प्रफुल्ल कोलख्यान — 276
बनारस शहर नहीं समास है — प्रफुल्ल कोलख्यान — 282
केदारनाथ सिंह और बनारस — आनंदवर्धन — 285
बनारस : आधा मंत्र में, आधा फूल में — प्रिया राय — 292
पचखियाँ फेंकता वसंत-सा बनारस... — सुमन केशरी — 295
नई कविता पर 'माँझी का पुल' — वेदरमण — 300

एक पुरबिहा का आत्मकथ्य उर्फ केदारनाथ सिंह की कविताएँ	स्वप्निल श्रीवास्तव	304
एक पुरबिहा का आत्मकथ्य	बृजराज सिंह	310
भोजपुरी : जहाँ धीमे-धीमे बजते हैं सातों समुद्र	जीवन सिंह	314
गाँव आने पर : एक बूढ़े पक्षी के लौटने का दुःख	आदर्श कुमार मिश्र	319
व्यापक संदर्भों और परिप्रेक्ष्य में माँ	अरुण होता	323
उम्मीद का बिरवा रोपते पिता	सूर्यनाथ सिंह	329
प्यार का पयोनिधि, अपार अपरंपार	रामदेव शुक्ल	333
हम कहाँ के दाना थे किस हुनर में यकता थे	विनोद तिवारी	340
एक कवि जो 'दाने' की विवशता कहता है	साहिल कैरो	345
जमीन पकने की खबर	आशीष मिश्र	348
जड़ों की ओर वापसी के लिए 'विद्रोह'	सुभाष राय	352
लोकचेतस सौंदर्यबोध के 'इक्सक्लूजन' के संकट की कविता : कुदाल	विंध्याचल यादव	359
चुप क्यों हो जगरनाथ?	बलराज पांडेय	363
चिट्ठी : शहर में रहते गाँव के एक मनुष्य की व्यथा	राहुल शर्मा	366
फर्क नहीं पड़ता : सभ्यता की हकीकत	प्रभाकर सिंह	369
राष्ट्रगान की लय से टकराती बिदेसिया की लय	आशीष त्रिपाठी	373
'अकाल में दूब' : अभी बहुत कुछ है...	मिथिलेश	377
आना : आना फर्क पड़ने का फलसफा भी, भरोसा भी	राजीव कुमार	383
'जाना' हिंदी की सबसे खौफनाक क्रिया	राजीव कुमार	388
मैंने शाम बेच दी है	अरुण कुमार	392
'देश और घर' : हिंदी और भोजपुरी सामर्थ्य का घोषणापत्र	श्रीप्रकाश शुक्ल	398
पानी की प्रार्थना : प्रार्थना का अंदाज	प्रियम अंकित	402
पानी की प्रार्थना : संकटग्रस्त सभ्यता का काव्यात्मक आख्यान	संजय गौतम	405
तुम आईं : मिलन से बिछोह तक	पल्लवी प्रकाश	408
'जो एक स्त्री को जानता है' से...	एकता कुमारी	412
अगर इस बस्ती से गुजरो : साधारण में निहित असाधारण...	कृष्णचन्द्र लाल	416
इनसानियत के बचाव के लिए ईश्वर से कवि का संवाद	ए. अरविंदाक्षन	420
जीवन में एकता	ए. अरविंदाक्षन	423
चुप्पियों का व्याकरण	ए. अरविंदाक्षन	425
केदारनाथ सिंह की दो कविताएँ : 'बाघ' और...	रवि श्रीवास्तव	428
रोटी : दुनिया की सबसे आश्चर्यजनक चीज	सत्यपाल शर्मा	440
टूटा हुआ ट्रक : घास के हाथों में	अवधेश प्रधान	445
पानी, नदी और बाढ़ के कवि केदारनाथ सिंह	रमाशंकर सिंह	447
भाषा में लौटता कवि	रेणु व्यास	453
बर्लिन की टूटी दीवार को देखकर : एकता को थाहती कविता	शशिकला त्रिपाठी	456

असल में मैं चुप था जैसे सब चुप थे	कृष्णमोहन	459
अप्रवासी पीड़ा का महाकाव्य : त्रिनिदाद	संतोष कुमार चतुर्वेदी	463
जब मैं मिलारेपा पढ़ रहा था	रूद्र प्रताप सिंह	472
चुप्पियाँ : मनुष्यता का मानक...	रामजी तिवारी	476
हस्ती मिटती नहीं हमारी	योगेश प्रताप शेखर	479
दिग्विजय का अश्व : काल से मुठभेड़	काजू कुमारी साव	483
सांप्रदायिकता के विरुद्ध दो कविताएँ...	संदीप सो. लोटलीकर	487
इस झपकी में भरपूर नींद जितने सपने हैं	असीम अग्रवाल	494
यादों का एक कोलाज : केदारनाथ सिंह	संजय जायसवाल	497
एक अकेले बिंब का घोषणा पत्र	संजीव कुमार श्रीवास्तव	502
ढलती सांझ में जीवन की कल्पना	भारती सिंह	506
कुछ दाग जिगर में है, कुछ जख्म फिजाओं में	भारती सिंह	509
एक पारिवारिक प्रश्न : अर्थ की सर्जना	पांडेय शशिभूषण शीतांशु	514
अनागत : सर्जनात्मक ऊर्जा की ईमानदार अभिव्यक्ति	कृष्ण कुमार सिंह	518
वन से उपवन की ओर खुलता वातायन	गंगा प्रसाद विमल	524

कविताओं में कवि

गुलजार, विश्वनाथ त्रिपाठी, देवेन्द्र कुमार 'बंगाली', जीवन सिंह, गोबिन्द प्रसाद 533-576
सुंदर चंद ठाकुर, सदानंद साही, श्रीप्रकाश शुक्ल, श्रीराम तिवारी, सुरेश सेन निशांत, अनिल त्रिपाठी श्याम सुशील, सुधीर रंजन सिंह, महेश आलोक, रंजना जायसवाल, मनीषा झा, मृत्युंजय, अमरजीत राम, निशांत, नवल, विमलेश त्रिपाठी, प्रमोद कुमार तिवारी, श्वेतांक, आमिर विद्यार्थी

धरोहर

हरिहर सिंह : अपने घर की नींव में जिंदा एक लेखक	केदारनाथ सिंह	577

पत्र

हरिहर सिंह, अजित सिंह, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, यशवंत सिंह, रामकिशोर सिंह 580-584

जीवन परिचय **585**

संपादक की ओर से

माझी के पुल में माझी की तरह

अब वे नहीं हैं

उनका न होना व्यक्तिगत तौर पर मेरे लिए बहुत ही पीड़ादायक है। सामूहिक तौर पर हिंदी कविता के विपुल पाठकों के लिए कष्टकारक है। उनका न होना मन को बड़ा उदास करता है। एक बेधक रिक्तता के विस्तार में ऊभ-चूभ होने की विवश और दारुण निपत्ति में झोंक देता है। भला निपत्ति से इनकार करने की सामर्थ्य अपने में कहाँ है। जिनमें सामर्थ्य होती है बहुत बड़े होते हैं। अपना सौभाग्य वैसा बिलकुल नहीं है। सौभाग्य तो दूर, ऐसे सौभाग्य का सपना भी आँखों से बहुत दूर है। खैर!

मगर केवल ऐसा ही नहीं है। वे अब भी हैं, अपने होने की बहुत-बहुत सी जगहों पर वे वैसे ही मौजूद हैं। उतने ही जीवंत, उतने ही सजग, उतने ही उत्फुल्ल। वे चकिया में है। वे दिल्ली में हैं। वे अपने शब्दों में हैं, शब्द की ऊर्जा और उष्मा में व्याप्त। वे अपने गाँव की गलियों में है, बोलते-बतियाते हुए। वे रानीगंज बाजार में हैं, चाय की दुकान पर, जहाँ उनके हाथ के चुक्कड़ की चाय को एक साथ न जाने कितने होंठ सुड़क रहे हैं। वे अपनी कविताओं की ध्वनियों में व्यंजना की तरह व्यक्त हैं। वे किसी संग्रहालय की पांडुलिपियों में किसी शब्द के नीचे दबी हुई चीत्कार को सुनते हुए से हैं। उनका इस तरह से होना बहुत-बहुत आश्वस्ति से भरा हुआ है। उनका होना 'माझी के पुल' में माझी की तरह होना है। होकर भी न होने की तरह और न होकर भी होने की तरह। उन्हें महसूसना रोचक भी है और रोमांचक भी।

केदारनाथ सिंह की कविता आधुनिक हिंदी कविता में एक पुल की तरह है जिससे होकर हिंदी की जातीय चेतना की संवेदना अपने समूचे रिक्थ के साथ आधुनिक जीवन बोध में दाखिल होती है। यह उनके रचनात्मक का अविस्मरणीय अवदान है। वे अपनी कविताओं के लिए और अधिक सार्थक और अधिक सुंदर नामों की खोज करते हुए हमारे बीच मौजूद रहेंगे। वे दुनिया के मुलायम और गर्म हाथ की तरह होने की आकांक्षा के बीच हमारे में उगाते हुए मौजूद रहेंगे।

वे किसी गड़रिए के भेड़ की खोज के चित्र हमारी आँखें में सजाते मौजूद रहेंगे।

वे इब्राहिम मियाँ का हालचाल जानने के उद्योग में हमारे बीच मौजूद रहेंगे। उनकी उपस्थिति में इब्राहिम मियाँ का वह उत्तर हमारे बीच उपस्थित रहेगा :

हवा है
पानी है
बस्ती के बाहर एक छोटा-सा कब्रिस्तान है
सब ठीक-ठाक है।

वे पानी की प्रार्थना की तरह हमारे बीच मौजूद रहेंगे।

केदारनाथ सिंह शुरू से कविता की उस धारा का प्रतिनिधित्व करते रहे हैं जो बौद्धिक व्यायाम और कवि कर्म का सार्थक अंतर पहचानती आई है। हिंदी साहित्य के वर्तमान दौर में जब कविता पढ़ने वालों की संख्या दिनोंदिन बहुत तेजी से कम होती जा रही है तब भी केदारनाथ सिंह की कविताएं अपनी अर्थवत्ता और लोकप्रियता में अविचल स्थित है। केदार जी के लिए गाँव और शहर, आदमी और पशु